३७: सत्यता-१३: जागृत मानव कर्म करते समय में भी स्वतंत्र, फल भोगते समय में भी स्वतंत्र

दिनांक -१२/१२/२०११

जागृत मानव कर्म करते समय में भी स्वतंत्र, फल भोगते समय में भी स्वतंत्र | जागृत मानव ही स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष, दयपूर्ण कार्य-व्यवहार करने योग्य होता है | स्वधन का स्वरूप श्रम का प्रतिफल, श्रम नियोजन प्राकृतिक ऐश्वर्य पर होना होता है | सेवा भी प्राकृतिक ऐश्वर्य पर ही होता है | दोनों प्रकार से श्रम का मूल्यांकन होता है | श्रम के प्रतिफल में ही आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन सम्बन्धी वस्तुएँ सुलभ होती हैं अथवा सर्वसुलभ होता है | इसमें यही सोचने को मिलता है कि क्या इन ६ मुद्दों पर मनुष्य श्रम नियोजन कर सकता है? ऐसा सोचा जा सकता है | इसका तात्पर्य में यह स्पष्ट किया है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से ही मानव किसी न किसी परिवार में किसी न किसी उत्पादन कार्य को करता है अथवा सेवा कार्य को करता है | जिसके फलित में विनिमय विधि से इन ६ चीजों को मानव पा सकता है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सम्भव है | इसमें व्यापर विधि को छोड़कर विनिमय विधि को बताया है | परिवार में केवल वितरण होना देखा जाता है | परिवार की आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का विनिमय होता है | विनिमय विधि से वांछित वस्तुओं को प्राप्त करते हैं | मानव संस्कृति का पहला उत्सव उत्पादन कार्य ही है | उसके बाद विनिमय उत्सव है, उसके बाद परम्परा उत्सव है | इस प्रकार उत्सवों का कतार सामान्य बुद्धि से इंगित होता है | इसमें कोई जटिलता का सम्भावना नहीं है | सर्वमानव सुख, शांतिपूर्वक जीना ही चाहता है | समझदार मानव प्रयत्नशील रहता ही है | अभी जिसको समझदार मानते हैं वो भी | इस क्रम में जागृत मानव विधि से मानव का इतिहास बनता है | मानवीतायापूर्ण मानव, देव मानव, दिव्य मानव जागृति के ही सीढियां हैं | दिव्य मानव निर्भ्रांत एवं पूर्ण जागृत, देव मानव निर्भ्रांत एवं जागृत, मानवीयतापूर्ण मानव भ्रान्ताभ्रांत एवं जागृत रहता है | यही विकसित चेतना पूर्वक जीते हैं | यही अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना होता है |

मानव सर्वदेश काल में जीवों को अपने से अविकसित माना ही है | दूसरा भाषा में मानव को जीवों से अधिक विकसित माना है | यह भौतिकवादी विधि का आधार है | ऐसा मानते हुए जीव चेतना में जीते हुए मानव अपराधी हो गये | इसका प्रमाण लाभोन्माद, भोगोन्माद, कमोन्मादी शिक्षा, सुविधा- संग्रह प्रवृत्ति, सीमा सुरक्षा में सभी अवैधता को वैध मान लेना पाया गया है | इन अपराध प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने के लिये विकसित चेतना का अध्ययन है | जीव चेतना विधि से अपराध कृत्यों के बिना मानव का जीना मुश्किल है यह भी तर्क में आता है | इस क्रम में जीव चेतना में भी मानव सुखी होना चाहता है | इस आंकलन से पता चलता है कि मानव सुख शांति पूर्वक जीने योग्य इकाई है | इस कामना में समानता दिखाई पड़ती है | थोड़ा सा प्रयत्न करना आवश्यक है, धीरे धीरे समझ में आता है | भ्रमित मानव जितना सोच सकता है, विकसित चेतना उससे अधिक बेहतर है | इसे प्रयोगपूर्वक, व्यवहारपूर्वक जी कर देख चुके हैं | यही मानवीयतापूर्ण मानव स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार रूप में जी पाता है | उसके मूल में परिष्कृत विचार, उसके मूल में विकसित चेतना

सहज चिंतन ज्ञान रहता है | यह अवधारणा रूप में ही होना पाया जाता है | अवधारणा स्वयं ज्ञान एवं आचरण है, तर्क नहीं | यही आज के अध्ययनशील मनीषियों के लिए ध्यान देने के लिए मुख्य मुद्दा है |

सह-अस्तित्व में ही विकास क्रम- विकास, जागृति क्रम-जागृति का बोध होता है | यह अध्ययन विधि से ही होता है | यही अध्ययन की पूर्णता है | ऐसे सत्य बोध अर्थात पूर्ण बोध के आधार पर किया गया विचार नियम, नियंत्रण,संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में प्रमाणित होता है | इसके मूल में किया गया अनुभव ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में रहता है | अस्तित्व स्वयं सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्य रूप में सहअस्तित्व होना अनुभव ज्ञान में आता है और समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व, नियम नियंत्रण संतुलन, न्याय धर्म सत्य, स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होता है | इस ढंग से अनुभव मूलक विधि से दिव्य मानव भी मानवीयतापूर्ण आचरण में ही जीता है |

इस ढंग से मानव सर्व देश काल में विकसित चेतना सहज ज्ञान एवं अनुभव मूलक प्रमाण संभव हो जाता है | इसे समझ कर अन्य भाषा में भी इसी को बताया जा सकता है | इस प्रकार सर्वदेशीय भाषा में प्रस्तुत होना ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का समानता का आधार बनता है | समान उद्देश्य, समान कार्य- व्यवहार ही मानव में समानता का आधार है | इसका दूसरा स्वरूप अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है | इन दोनों विधियों से एक ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं जो कि अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है | अखण्ड समाज में समानांतर संस्कृति, सभ्यता उत्सवों के रूप में प्रकट होता है | यही नियम उत्सव का कारण है | इस विधि से विधि व्यवस्था प्रमाणित होता है, तभी समानता वर्तमानित होता है | यही अभयतापूर्वक जीने का सूत्र है | अभयतापूर्वक जीने के क्रम में ही अखण्ड समाज स्वरूप को प्राप्त कर सकते हैं | यही अपराधमुक्त मानव परम्परा का पहचान है | एक दूसरे व्यक्तियों के साथ, परिवारों के साथ, समुदायों के साथ शंका, समस्या, अपराध, धोखा का छाया में अखण्ड समाज होना सम्भव नहीं है | अखण्ड समाज का स्वरूप ही सार्वभौम व्यवस्था का आधार है | इस क्रम में हर मानव इस बात का अनुभव करेगा कि वह कर्म करते समय में स्वतन्त्र तथा फल भोगते समय में भी स्वतन्त्र है | सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत